Tender Heart High School, Sector - 33-B, Chandigarh

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-
"अन्नदाता ! प्यार कहने में जबान पर कैसे आए ? वो तो दिल की बात है। मौके पे ही देखा जाता है और कहने को तो मैं कही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाज़िर कर सकता हूँ।"

प्रश्न ① वक्ता और श्रोता कौन - कौन हैं, दोनों का परिचय दीजिए। वक्ता ने अन्नदाता शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?

उत्तर इस गद्यांश में वक्ता कीरत बारी है और श्रोता धाय माँ पन्ना हैं। कीरत जूठी पत्तलें उठाने वाला बारी है। उसकी आयु चालीस वर्ष है। वह अनपढ़ है। महल के बाहर सिपाहियों का पहरा देखकर उसकी समझ में कुछ नहीं आता। वह कुँवर उदयसिंह से अत्यंत स्नेह रखता है तथा उनकी रक्षा के लिए अपने प्राण भी न्योछावर करने को तत्पर है। वह अत्यंत उत्साही और वीर है। वह बहुत चतुराई से कुँवर उदयसिंह को पत्तलों की टोकरी में छिपाकर महल से बाहर ले जाकर उनके प्राणों की रक्षा करता है।

श्रोता पन्ना धाय है। वह महाराणा साँगा के छोटे पुत्र उदयसिंह की धाय माँ तथा संरक्षिका हैं। वे अत्यन्त ममतामयी, कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वामिभक्त, बुद्धिमती और दूरदर्शी हैं। उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करना एवं उनका लालन-

पालन करना ही उनके जीवन का उद्देश्य है। वे एक वीरांगना हैं जो बनवीर जैसे दुष्ट और निर्मम पुरुष का मुकाबला करके वे अपनी सूझ-बूझ और वाकपटुता से बनवीर को भी चकमा दे देती हैं।

प्रस्तुत गद्यांश में अन्नदाता शब्द का प्रयोग वक्ता ने धाय माँ पन्ना के लिए किया है।

प्रश्न (ii) वक्ता ने श्रोता की कौन-सी बात सुनकर उपर्युक्त कथन कहा ?

उत्तर - वक्ता कीरत है और श्रोता पन्ना धाय है। पन्ना धाय ने कीरत से पूछा था कि – 'तो कीरत ! तुम कुँवर जी को बहुत प्यार करते हो ?'

उनके इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए उपर्युक्त कहा कि अन्नदाता ! प्यार कहने पर जबान पर कैसे आए ? वह तो दिल की बात है। यह प्रेम मौके पर ही देखा (परखा) जाता है और कहने को तो मैं कह ही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

प्रश्न (iii) वक्ता ने श्रोता की क्या सहायता की, कब और कैसे ?

उत्तर पन्ना धाय ने यह ठान ली थी कि वे कुँवर उदयसिंह की हर परिस्थिति में रक्षा करेंगी। वे अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटेंगी। इसलिए उन्होंने कुँवर उदयसिंह को बचाने कीरतवारी (जो प्रस्तुत गद्यांश का वक्ता है) से कहा कि तुम सोए हुए उदयसिंह को अपने पत्तलों के टोकरे में लिटाकर उन पर जूठी और गीली पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओ और बेरिस नदी के किनारे मिलना।

कीरत ने ऐसा ही किया। उसकी जूठी पत्तलों के टोकरे पर किसी ने शक भी नहीं किया और उसने कुँवर उदयसिंह को सुरक्षित महल से बाहर निकाल लिया।

प्रश्न (iv) पन्ना ने कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा किस प्रकार की ?

उत्तर - पन्ना ने कुँवर उदयसिंह को कीरत बारी के हाथों महल से बाहर भिजवा दिया, अब उदयसिंह पूरी तरह सुरक्षित थे। कीरत के जाने के बाद पन्ना ने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर अपने पुत्र चंदन को कुँवर की शैया पर सुला दिया और उसका मुख कपड़े से ढँक दिया। बनवीर जब उदय सिंह को मारने आया तब उसने सोए हुए चंदन को ही कुँवर उदयसिंह समझकर उसकी हत्या कर दी। इस प्रकार पन्ना ने अपने पुत्र की बलि चढ़ाकर मेवाड़ के सिंहासन के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की।

[अंतिम पृष्ठ]